अध्याय दो

शब्द-संरचना

विश्व की बहुत-सी भाषाओं की तरह हिन्दी भाषा में भी शब्द-रचना, उपसर्ग + शब्द, शब्द + प्रत्यय, शब्द + शब्द (समास), संक्षेप-समुच्चय, तथा पुनरुक्ति से तो की ही जाती है, उपसर्ग + प्रत्यय से भी की जाती है। कहना न होगा कि शब्द-रचना की यह पद्धति विश्व की कम ही भाषाओं में मिलेगी। यहाँ इन सभी को अलग-अलग लिया जा रहा है।

उपसर्ग

उपसर्ग उस भाषिक इकाई को कहते हैं, जिसका भाषा-विशेष में स्वतंत्र प्रयोग न होता हो, किन्तु जिसे विभिन्न प्रकार के शब्दों के आरम्भ में जोड़कर शब्द-रचना की जाती हो। जैसे कु + कर्म—कुकर्म। यहाँ 'कु' उपसर्ग है। हिन्दी में तीन[1] प्रकार के उपसर्गों का प्रयोग होता है।

तत्सम उपसर्ग—जो संस्कृत में ज्यों-के-त्यों हिन्दी में ले लिए गए हैं। जैसे—अति, अधि, अनु, अप, अभि, अव, आ, उत्, उप, दुः, निः, परा, परि, प्र, प्रति, बहु, वि, सम्, सह, सु आदि।

तद्भव उपसर्ग—जो संस्कृत के उपसर्गों या शब्दों से ध्वनि की दृष्टि से कुछ परिवर्तित होकर आए हैं तथा जिनका हिन्दी में स्वतन्त्र प्रयोग नहीं होता, किन्तु शब्द-रचना के लिए जो प्रयुक्त किए जाते हैं। जैसे अ, औ, क, दु, नि, पर, स आदि।

विदेशी उपसर्ग—जो उपसर्ग विदेशी भाषाओं से आए हों। हिन्दी में विदेशी उपसर्ग मुख्यतः केवल फ़ारसी तथा अरबी के हैं। जैसे अल, दर, ब, बा, बे आदि। आगे, उपसर्ग अर्थ और प्रयोग के उदाहरणों के साथ दिए जा रहे हैं।

अ : (1) **प्रतिकूल**—अहित, अधर्म; (2) **रहित, हीन**—अदृश्य, अज्ञान, अशांत, अबोध, अथाह; (3) **निषेध**—अपेय, अखाद्य।

अधि : (1) **अधिक**—अधिमास, अधिसंख्य; (2) **श्रेष्ठ**—अधिपति, अधिनायक, अध्यात्म; (3) **अधिकारपूर्वक**—अधिग्रहण।

अन : (1) **अतीत या परे**—अनगिनत, अनमोल; (2) **अभाव**—अनाचार, अनमेल, अनपढ़; (3) **प्रतिकूल**—अनरीति।

---

1. तत्सम, तद्भव, विदेशी। हिन्दी में किसी भी देशज उपसर्ग का प्रयोग नहीं होता।

अनु : (1) प्रत्येक—अनुदिन', अनुक्षण; (2) समान—अनुरूप; (3) बाद का—अनुवाद; (4) पीछे—अनुचर, अनुगमन, अनुकरण, अनुसरण।

अंतः : अन्तर—अंतस् : (1) भीतर—अंतस्सलिला, अंतस्साक्ष्य, अंतर्दशा, अंतश्चेतना, अंतःकरण; (2) सभी—अंतर्राष्ट्रीय; (3) बाहर—अंतर्जातीय।

अप : (1) बुरा—अपशब्द, अपकीर्ति; (2) अनुचित—अपव्यय, अपहरण; (3) विपरीत—अपमान; (4) नीचे—अपकर्ष, अपभ्रंश।

अव : (1) घटना—अवमूल्यन; (2) अभाव—अवचेतन; (3) उलट—अवगुण; (4) नीचे- अवरोहण, अवनत।

आ : (1) ऊपर—आरोहण; (2) तक—आजानु, आसमुद्र, आमरण; (3) आदि से अन्त तक—आजीवन; (4) जन्म से अन्त तक—आजन्म।

आविः, आविर्, आविष् : बाहर आविर्भाव, आविर्भूत, आविष्कार।

उत : (1) अधिक—उत्तप्त; (2) मुक्त—उद्दंड; (3) प्रकट—उद्घोष; (4) ऊपर—उत्कर्ष।

उप : (1) नीचे—उपमंत्री, उपप्रधान, उपसभापति; (2) गौण—उपपुराण; (3) दूसरा—उपनाम, उपपति; (4) अनुकूल पक्ष में—उपकार; (5) पहले—उपसर्ग; (6) और आगे—उपभेद।

कु : (1) बुरा—कुकर्म, कुपुत्र, कुमार्ग, कुपात्र, कुबुद्धि, कुचाल; (2) अशुभ—कुदिन, कुबोल।

दु : (1) बुरा—दुकाल, दुराज। दुभाषिया तथा दुसूती जैसे शब्दों में 'दु' उपसर्ग न होकर समस्तपद का प्रथम सदस्य है।

दुर् : दुः—दुष्—दुस् : (1) बुरा—दुर्दिन, दुर्दशा, दुर्गुण, दुष्कर्म, दुश्चरित्र; (2) कठिन—दुर्बोध, दुर्गम, दुर्निवार, दुस्तर; (3) अभाव—दुर्बल।

ना : नापसन्द, नाउम्मीद, नालायक़।

नि : (1) नहीं—निडर, निपूता, निकम्मा, निरोगी; (2) पूर्णतः—निखालिस (क्षेत्रीय तथा अमानक प्रयोग)

निर्—निष्—निः—निश्—निस् : (1) नहीं, निषेध—निरर्थक, निराहार, निरंकुश, निरपराध, निष्काम, निष्कंटक, निस्तर्क्य, निःस्पृह; (2) बाहर—निःश्वास।

पर : (1) बाद का—परवर्ती, परसर्ग; (2) दूसरा—परलोक, परपुरुष; (3) पूर्व का—परदादा, परपोता; (4) दूसरे का—परोपकार।

परा : विपरीत—पराजय।

परि : (1) आस-पास, चारों ओर—परिभ्रमण, परिक्रमा; (2) पूरी तरह—परिपक्व, परिपूर्ण; (3) अधिक—परिश्रम।

प्र : (1) विशेष—प्रख्यात; (2) ऊपर, पहले के—प्रपितामह; (3) नीचे.

बाद का—प्रपौत्र; (4) बड़ा—प्राचार्य, प्राध्यापक, प्रबल; (5) उप—प्रभेद, प्रभाग।

प्रति : (1) विरुद्ध—प्रतिरोध, प्रतिवाद, प्रतिस्पर्धा; (2) सामने—प्रत्यक्ष; (3) बदले में—प्रत्युपकार।

ब : (1) सहित, साथ—बखूबी, बख़ैरियत; (2) के द्वारा—बज़रिये; (3) से—खुद-ब-खुद; (4) तुलना में—बनाम; (5) अनुसार, मुताबिक़—बदस्तूर।

बद : बुरा—बदबू, बदनाम, बदक़िस्मत।

बर : (1) पर, ऊपर—बरवक़्त; (2) अलग—बरतरफ़; (3) निश्चय—बरक़रार।

बहि, बहिष्, बहिर् : बाहर का—बहिरंग, बहिष्कार, बहि:साक्ष्य।

बा : (1) सहित, के साथ—बाक़ायदा, बाअदब; (2) वाला—बाआबरू।

बिला : बिना—बिलानागा, बिलाशक।

बे : (1) बिना, रहित— (1) बेईमान, बेरहम, बेचारा, बेइज़्ज़त, बेक़ायदा, बेबुनियाद, बेढंगा, बेखटके, बेडौल, बेजोड़, बेढब; (2) स्वार्थ—या पूर्णत:—बेफ़ज़ूल, (क्षेत्रीय तथा अमानक प्रयोग)।

ला : बिना —रहित—लाइलाज, लापता, लापरवाह, लाजवाब, लावारिस।

वि : (1) बिना—वियोग; (2) आधिक्य—विकराल; (3) विशेष—विगत; (4) स्वार्थे—विभाग; (5) विपरीत—विक्रय; (6) दूसरा—विदेश, विकल्प।

स : (1) सहित—सपरिवार, सजीव, सकुशल; (2) एक ही का—सगोत्र, सजातीय; (3) अच्छी सु—सपूत।

सत्-सद् : (1) अच्छा—सदाचार, सत्कर्म, सद्गति, सद्गुण, सच्चरित्र, सज्जन; (2) सच्चा—सद्गुरु।

स (सङ्, सञ्, सन्, सम्) : (1) सम्यक् रूप से—संयुक्त संतोष, संस्तुति, संयोग; (2) स्वार्थे—संप्राप्ति, (3) समान; संगति।

सर : (1) मुख्य—सरपंच; स्वार्थे—सरहद।

सह : (1) साथ—सहगमन, सहचर, सहगामी, सहभाषा; (2) आपसी सहयोग से युक्त—सहकारी, सहयोगी।

सु : (1) अच्छा—सुगन्ध, सुअवसर, सुयश, सुव्यवस्थित, सुपात्र, सुपुत्र; (2) सुन्दर—सुदर्शन, सुकेशी; (3) सरल—सुकर, सुगम; (4) बहुत—सुदीर्घ, सुसम्पन्न, (5) शुभ—सुदिन।

स्व : (1) अपना—स्वदेश स्वराज्य, स्वतन्त्र, स्वभाव, (2) स्वार्थे—स्वरूप, (3) अपने, स्वयं—स्वचालित।

हम : (1) समान—हमराह, हमवतन, हमउम्र, हमदर्द।